सुमिता सिरोठिया

दूरदर्शन से वर्ष 2005 में कॅरियर की शुरुआत की. उन्होंने युवा समय जैसे लोकप्रिय कार्यक्रमों से विशेष पहचान बनायी. स्वास्थ्य मंत्रालय के केंद्रीय कार्यक्रम कल्याणी के माध्यम से राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में महिला स्वास्थ्य, स्वच्छता और टीकाकरण पर व्यापक जागरुकता अभियान चलाया. कला संस्कृति, कृषि दर्शन और विशेष संवाद कार्यक्रमों के जरिए सामाजिक सरोकारों को मंच दिया. वे रियल स्मार्ट श्रीमती प्रतियोगिता में केंद्रीय जोन का प्रतिनिधित्व करते हुए विजेता रहीं. उन्होंने टीवी के लोकप्रिय संतूर विज्ञापन से राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनायी. सुमिता सिरोठिया का मानना है कि नवभारत की ओर से महिला दिवस पर सम्मानित होना मेरे लिए सामाजिक जिम्मेदारी की नई शुरूआत है. यह सम्मान व्यक्तिगत नहीं, बल्कि समाज के लिए किए गए कार्यों की स्वीकृति है. महिलाओं को आत्मनिर्भर व शिक्षित होना चाहिए. महिलाओं पर ही परिवार को संभालने की सबसे अहम जिम्मेदारी होती है. परिवार की बेहतर ढंग से परवरिश करने वाली महिलाएं ही समाज को आगे बढ़ाने के दायित्व का भी निर्वहन कर सकती हैं.

रखशां शमीम जाहिद

बेगम्स ऑफ भोपाल क्लब की अध्यक्ष रखशां शमीम जाहिद सामाजिक कार्यकर्ता हैं और वे महिलाओं के उत्थान के कार्य लगातार कर रही हैं. वे पारंपरिक कलाओं के संरक्षण के लिए भी लगातार प्रयत्नशील हैं. उन्होंने अपने कॅरियर का प्रारंभ पत्रकार के रूप में किया था. उन्होंने अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के सम्मान प्राप्त किए हैं. सम्मान प्राप्त करने के दौरान उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि मुझे यहां बुलाने के लिए नवभारत परिवार का धन्यवाद. मैं बता दूं कि मेरे कॅरियर की शुरुआत क्रॉनिकल-नवभारत से शुरू हुई थी. 1994 से 97 तक मैं यहां पर सब-एडिटर थी. हालांकि उस समय स्टूडेंट थी मैं. ये श्री प्रफुल्ल माहेश्वरी जी का बड़प्पन था कि वे यंग टैलेंट को उस समय भी जानते थे, समझते थे. कम्प्यूटर पर हम लोगों से निबंध लिखवाया गया. उन्होंने हमारी लैंग्वेज चेक की. उस समय मैं और बॉबी नकवी, सुष्मिता मालवीय और हसन साहब भी थे, हसन साहब हमारे वरिष्ठ थे. चीफ सब थे. फिर मेरी डॉक्टर का जन्म होने के कारण पारिवारिक दायित्वों के चलते जर्नलिज्म छोड़ना पड़ा. अब दूसरे प्लेटफार्म की वजह से मुझे यहां नवाजा गया है आज. पहले बिहाइंड द सीन थे, अब पेपर वाले हमारे बारे में छापते हैं. बहुत शुक्रिया.

ऊषा खरे

शिक्षा के क्षेत्र में अनेक नवाचार कर अपने विद्यार्थियों को अध्ययन और अध्यापन के लिए प्रेरित करने का कार्य कर चुकीं एक सरकारी विद्यालय की प्राचार्य ऊषा खरे सामाजिक जीवन में सेवानिवृत्ति के बाद भी सक्रिय हैं. उनका कहना है कि किसी के भी जीवन में शिक्षा उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितनी कि हवा और पानी. जैसा कि उन्होंने संदेश दिया, उनके बारे में जानने से साफ है कि वे इसका पालन भी करती हैं. उन्होंने चार दशक तक शिक्षा विभाग में अध्यापन का कार्य किया. इस दौरान वे राष्ट्रपति पुरस्कार से भी सम्मानित हुईं. उनके पिता भी अध्यापन के कार्य से जुड़े थे और हेड मास्टर थे. उनके परिवार में सदैव शिक्षा से जुड़ा माहौल रहा. शायद यही वजह रही कि अध्यापक के रूप में सरकारी सेवा में आने के बाद उन्होंने स्कूली बच्चों के लिए हरसंभव मदद करने का संकल्प लेते हुए इसे मूर्त रूप भी दिया. वे केंद्र सरकार की नई शिक्षा नीति को तैयार करने में भी अपनी सक्रिय भूमिका सुनिश्चित कर चुकी हैं. वे लगभग छह वर्ष पहले केंद्र सरकार की ओर से कौन बनेगा करोड़पति के कर्मवीर एपिसोड के लिए नियुक्त हुई थीं. इस दौरान उन्हें बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन के साथ कार्य करने का अवसर भी मिला. उन्होंने यहां से पुरस्कार के रूप में 25 लाख रुपए मिले, जो उन्होंने अपने सरकारी स्कूल में दान कर दिए.

भूरी बाई

पद्मश्री से सम्मानित जनजातीय चित्रकार भूरी बाई का कहना है कि नए कलाकारों को परिश्रम पर काफी जोर देना चाहिए. मेहनत का फल अवश्य मिलता है. बच्चों को अपनी कला को विकसित करने के लिए निरंतरता बनाए रखना चाहिए. उन्होंने अपना ही उदाहरण देते हुए कहा कि वे भी लगातार परिश्रम के कारण आगे बढ़ सकी हैं. उनकी चित्रकला निखारने में उनकी मां झब्बू बाई का भी विशेष योगदान रहा है. उनकी पोती रीता भूरिया ने सम्मान ग्रहण किया. भूरी बाई की चित्रकलाएं विदेश में भी प्रसिद्ध हैं.

पूनम श्रोती

पूनम श्रोती ने कहा कि मुझे पहले भी कई जगह सम्मानित किया जा चुका है लेकिन नवभारत ने यह सम्मान देकर मेरी जिम्मेदारी बढ़ाई है. इसके लिए बहुत बहुत धन्यवाद देती हूं, सम्मान से मुझे और ऊर्जा के साथ कार्य करने की प्रेरणा प्राप्त हुई है. मेरा प्रयास रहेगा कि मैं हमेशा अपने समाज और महिलाओं के हित में काम करती रहूं. पूनम श्रोती सामाजिक कार्यों के साथ ही मोटीवेशनल स्पीकर के रूप में समाज, युवाओं और महिलाओं को प्रेरणा दे रही हैं.

डॉ. रेणु शर्मा

डॉक्टर रेणु शर्मा पेशे से एनेस्थेटिस्ट चिकित्सक हैं. आई. सी. यू. और क्रिटिकल केयर में आपकी विशेषज्ञता है. आप चिकित्सकीय पेशे के अलावा ऐसे अनेक कार्य कर रही हैं, जिनके माध्यम से समाज में बदलाव लाए जा रहे हैं. वे जैविक खेती के द्वारा जहरमुक्त अनाज उगाने का कार्य भी कर रही हैं. भोपाल के प्रतिष्ठित नर्मदा हॉस्पिटल की संचालक डॉ. शर्मा नर्मदा निर्मल निकेतन के जरिए बुजुर्गों की देखभाल, नर्मदा कुटीर उद्योग की सहायता से महिला सशक्तिकरण और ऐसे अनेक सामाजिक कार्य कर रही हैं, जिनसे महिलाओं का विकास हो रहा है और उन्हें प्रेरणा भी मिल रही है. उनका कहना है कि महिलाओं के अंदर ऊर्जा का अनंत भंडार है. वे जो चाहें कर सकती हैं. महिलाओं को बड़े सपने देखना चाहिए और फिर उन्हें पूरा करने के लिए स्वयं को तैयार भी करना चाहिए. नारी, सुपर नारी है और उनके लिए अनंत आकाश खुला है. आपने गांधी मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस की डिग्री हासिल करने के बाद एनेस्थीसिया में पोस्ट ग्रेजुएशन किया. विभिन्न हादसों में गंभीर रूप से घायल होने वाले मरीजों का जीवन बचाने में उनकी विशेषज्ञता है. अर्थात हादसे के बाद शीघ्रातिशीघ्र अस्पताल पहुंचने वाले मरीजों को ट्रामा सेंटर में अच्छे से अच्छा इलाज देकर उनकी जान बचाने का कार्य उन्होंने काफी तन्मयता किया है.

गरिमामय सुरुचि नारी शक्ति सम्मान समारोह में मेहमानों की उपस्थिति ने समारोह की शोभा में चार चांद लगाए.

आशा दवानी

महिला दिवस पर नवभारत द्वारा सम्मानित किया जाना वे अपने संघर्षों की सार्थकता मानती हैं. कठिन समय, बीमारी और आर्थिक चुनौतियों के बीच जो सफर तय किया वह सम्मान के रूप में सामने है. उनके लिए यह सम्मान केवल व्यवसायिक सफलता का नहीं बल्कि साहस और पारिवारिक समर्पण का प्रतीक है. उन्होंने अपने पति को लीवर डोनेट किया है. वे चुनौतियों के बीच होममेकर से सफल व्यवसायी बन सकीं. उनकी यह सफलता उन महिलाओं के प्रेरक है, जो घर से बाहर नहीं निकल पाती हैं.

सुरेखा कांबले

सुरेखा कांबले, भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्राचीनतम एवं गंभीर परंपरा ध्रुपद की राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित साधिका, संगीत चिकित्सक और शिक्षिका हैं. वे ध्रुपद परंपरा में मध्यप्रदेश की पांच महिलाओं में से एक महिला ध्रुपद गायिका के रूप में विशेष पहचान रखती हैं. उन्होंने इस विधा को वैज्ञानिक, चिकित्सकीय और ध्यानात्मक साधन के रूप में विकसित किया. आपने विश्व विख्यात ध्रुपद आचार्य उस्ताद जिया फरीदुद्दीन डागर से भोपाल स्थित ध्रुपद केंद्र में गुरु शिष्य परंपरा के तहत कठोर एवं अनुशासित प्रशिक्षण प्राप्त किया. डागरवाणी की इस परंपरा को आत्मसात करते हुए उन्होंने ध्रुपद का स्पीच थेरेपी, तनाव प्रबंधन, एकाग्रता, संकल्प शक्ति एवं ध्यान से जोड़ा और इसे एक समन्वित एवं बहुआयामी संगीत दृष्टि प्रदान की. आकाशवाणी और दूरदर्शन में भी कलाकार के रूप में संबद्ध हैं. भारतीय परंपरागत संगीत पर आधारित नवीन रचनात्मक प्रयोग और संगीत संयोजन उनके कार्य के महत्वपूर्ण पक्ष हैं. सुश्री सुरेखा कांबले ने इस अवसर पर कहा कि हमारी सांस्कृतिक विरासत अत्यधिक समृद्ध है. शास्त्रीय संगीत भी इसी का हिस्सा है.

शबिस्ता जकी

तर्कों के जरिए सदैव अपनी बात रखने वालीं भोपाल नगर निगम में विपक्ष की नेता शबिस्ता जकी ने अपनी एक अलग ही पहचान बनायी है. वे पेशे से अधिवक्ता हैं, लेकिन सामाजिक और राजनैतिक कार्यों में भी खासा दखल है. वे गरीब, लाचार और कमजोर लोगों की मदद के लिए सदैव तत्पर रहती हैं. बगैर किसी भेदभाव के वे सबकी मदद करती हैं और यहां तक कि गरीबों के अदालतों में केस लड़ने के लिए फीस तक नहीं लेती हैं. अपनी तमाम जिम्मेदारियों के प्रति सजग रहने वालीं शबिस्ता जकी वर्ष 2009 में पहली बार पार्षद बनी थीं. इसके बाद 2015 और 2022 में फिर से चुनीं गईं. इसके बाद वे नगर निगम में नेता प्रतिपक्ष बनीं. वे भोपाल नगर निगम में पहली महिला नेता प्रतिपक्ष हैं. वे इसकी जिम्मेदारी बखूबी निभा रही हैं और जनहित से जुड़े मुद्दे सदन और सड़क, दोनों जगह पुरजोर तरीके से उठाती हैं. श्रीमती जकी को नारी आइकॉन सम्मान 2025 में मिला है. वे खेलों की दुनिया से भी जुड़ी हुई हैं. वे महिलाओं को खेलकूद में सक्रिय रूप से जुड़ने के लिए सदैव प्रोत्साहित करती हैं. उनका कहना है कि प्रत्येक महिला को अपने संवैधानिक अधिकारों और दायित्वों को न सिर्फ जानना चाहिए, बल्कि उनके प्रति सजग और सतर्क भी रहना चाहिए.

पूजा सिंह परमार

नारी सशक्तिकरण संघ की राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं. विगत 8 वर्षों से महिलाओं के उत्थान के लिए कार्यरत हैं. महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, मानसिक और हर तरीके से सशक्त बनाने का अभियान चला रही हैं. अब तक भोपाल, मंडीदीप, सीहोर, बैरसिया सभी क्षेत्रों को मिलाकर 200 जगह अपने नारी सशक्तिकरण के सेंटर बना चुकी हैं, जिसमें से 155 ग्रामीण क्षेत्र और 45 शहरी क्षेत्र शामिल हैं. हर गांव में नारी शक्ति लीडर नियुक्त की गई हैं, ताकि वे अन्य महिलाओं की मदद कर सकें. अब तक नारी शक्ति की 300 लीडर बना चुकी हैं. उन्होंने बाकायदा नारी सशक्तिकरण संघ का हेड ऑफिस भोपाल के नीलबड़ क्षेत्र में बनाया है, जो सिर्फ महिलाओं के उत्थान के लिए ही कार्यरत है. उसमें महिलाओं को सिलाई, कढ़ाई, मेहंदी, ब्यूटी पार्लर, मेकरम सिखाया जाता है और इसके अलावा महिलाओं की काउंसलिंग भी की जाती है जब उन्हें घरेलू हिंसा, मानसिक, शारीरिक ,आर्थिक समस्याएं होती हैं तो उनकी समस्या के निवारण के लिए उन्हें नारी शक्ति ऑफिस बुलाकर उनकी समस्याओं को सुना जाता है. उनका कहना है कि वे यह सम्मान महिलाओं के लिए ही समर्पित करती हैं और आजीवन महिलाओं के उत्थान के लिए कार्य करेंगी.

वर्षा श्रीवास्तव

डाइटीशियन प्रो वर्षा श्रीवास्तव का कहना है कि कामकाजी महिलाओं को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि उन्हें अपने कार्य के अलावा घर के कार्य भी करना पड़ते हैं, अगर हम समय पर पौष्टिक खाना नहीं खाएंगे, तो हमारा स्वास्थ्य कमजोर होगा और हमारे कार्य करने की क्षमता कमजोर होगी. प्रो. श्रीवास्तव प्रारंभ से ही मेधावी रही हैं और उनके स्टूडेंट्स देश विदेश में फैले हुए हैं. अब उन्होंने डाइटीशियन को एक पेशे के रूप में स्वीकार कर लिया है. साथ में समाजसेवा भी जारी है.

नवभारत परिसर में अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर आयोजित सुरुचि नारी शक्ति सम्मान समारोह के दौरान नवभारत परिवार, प्रबंध संपादक सुमीत माहेश्वरी और सुरुचि की संपादक श्रीमती पूजा माहेश्वरी के साथ कुछ इस तरह नजर आया.